सपना सच हुआ

मैं महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए समर्पित संस्थाओं से जुड़ी हूं, इसलिए स्टाइलिश दिखने की इच्छुक युवा लड़कियों के लिए एक दिलचस्प विकल्प लेकर आ रही हूं जो इसे अफोर्ड नहीं कर सकती.

पराफॉर्मेंस ओरिएंटेड रोल्स के लिए फिल्ममेकर्स की पहली पसंद बन चुकी हुमा कुरैशी ने वर्ष 2012 में फिल्म गैंग्स ऑफ वासेपुर से अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत की थी. इसके अलावा उनके खाते में तृष्णा, लव शव ते चिकन खुराना, शर्ट्स, डी डे., इश्किया, जॉल एल.एल.बी.2, वायसरायज हाऊस, दोधारा जैसी फिल्में भी हैं. फिलहाल उनकी चर्चा आने वाली फिल्म काला को लेकर हो रही है. पेश हैं उनसे एक बातचीत के प्रमुख अंश-

- सुपरस्टार रजनीकाँत के साथ फिल्म 'काला' में काम करने का मौका मिलने पर क्या कहेंगी?

यही कि यह सपना सच होने जैसा है. दरअसल, रजनी सर बेहद प्रेरणादायक और शानदार इंसान हैं. शूटिंग के दौरान मुझे उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला, लेकिन सेट पर मौजूद हर एक शख्स भी उत्साह से भरा था. इसमें काम करने का अनुभव मुझे जीवन भर याद रहेगा, मैंने बहुत कुछ सीखा और मुझमें पहले से बहुत सुधार आया है. फिल्म में मेरे लिए एक मजबूत महिला का किरदार गढ़ने के लिए मैं फिल्म के निर्देशक पी.रंजीत की भी शुक्रगुजार हूं.

किस वजह से आप 'काला' में काम करने के लिए तैयार हुई?

जब मैंने इस फिल्म की कहानी पढ़ी, तो मैं फिल्म का हिस्सा बनने के लिए तुरंत तैयार हो गई, क्योंकि इस फिल्म में काम करने का मतलब था रजनीकांत सर के साथ काम करने का सपना पूरा होगा.

- अपने करियर की प्रगति से कितनी संतुष्ट हैं?

पूरी तरह संतुष्ट हूं, क्योंकि फिल्ममेकर्स मुझे अच्छी एक्ट्रेस समझते हैं, जो स्टार होने की स्थिति से कहीं ज्यादा बेहतर है. यही वजह है कि मेरे लिए अच्छे सब्जेक्ट पर काम करना सबसे बड़ी उपलब्धि है. मैं खुद को स्टार नहीं समझती और बस अच्छी फिल्मों पर ध्यान देना चाहती हूं. अगर लोग मेरे काम को पसंद करते हैं, तो खुशी तो होती ही है.

- बॉलीवुड के बाद भी क्या आपको लगता है कि यहां पक्षपात होता है?

हां, अगर मैं यह कहूंगी कि बॉलीवुड में पक्षपात नहीं होता तो यह झूठ होगा. सच्चाई यह है कि यहां भाई-भतीजावाद चलता है. अगर कोई कहे कि यहां ऐसा नहीं है, तो इसका मतलब यह हुआ कि वह झूठ बोल रहा है. हालांकि, यहां यह भी जोर देकर कहना चाहूंगी कि इंडस्ट्री के लोग बहुत मेहनती हैं और अपने काम को लेकर जुनूनी हैं और आपको उनके काम को क्रेडिट कठिन मेहनत और क्षमता को देना होगा, लेकिन इंडस्ट्री से होना काम को आसान जरुर बना देता है.

- खुद की राह आसान बनाने के लिए आप क्या करती हैं?

इसके लिए मैं हमेशा बॉलीवुड में बड़े व्यक्ति से सलाह लेने की जरुरत महसूस करती हूं. इसकी वजह यह है कि कई बार मैं नहीं जान पाती कि अपने करियर को किस दिशा में ले जाऊं, कौन-सी फिल्म करूं और ऐसे समय में एक बड़े यानी अनुभवी व्यक्ति की जरुरत पड़ती है, जो योजना बनाने में मदद करे. इंडस्ट्री से जुड़े लोगों को यही लाभ मिलता है.

- सुनने में आया है कि आप अपनी फैशन लाइन शुरु करने जा रही हैं?

हां, चूंकि मैं महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए समर्पित संस्थाओं से जुड़ी हूं, इसलिए स्टाइलिश दिखने की इच्छुक युवा लड़कियों के लिए एक दिलचस्प विकल्प लेकर आ रही हूं जो इसे अफोर्ड नहीं कर सकती. मेरा मानना है कि देश भर में इतनी जवान लड़कियां अच्छे कपड़े पहनना और अच्छी दिखना चाहती हैं, लेकिन शौक पूरा नहीं कर पाती. फैशन सिर्फ अभिजात्य वर्ग के लिए नहीं है, बल्कि फैशन हर किसी के लिए होना चाहिए, जो खुद अच्छा दिखना चाहता है. मेरी यह फैशन लाइन युवा लड़कियों के लिए होगी. मैं खुद कपड़ों की डिजाइनिंग और क्लोदिंग, ब्रांड, डिस्ट्रीब्यूशन पर ध्यान रखूंगी. दरअसल, मैं कुछ समय से यह चाहती थी कि युवाओं के लिए स्टाइलिश और किफायती क्लोदिंग लाऊं. फिलहाल लॉजिस्टिक्स का निर्धारण करने की प्रक्रिया में हूं.

- आपने सिर्फ कुछ महीने के भीतर ही अपना वजन काफी घटा लिया है. यह चमत्कार कैसे हुआ?

मैंने योगा और 28 दिन की डीटॉक्स डाइट का इस्तेमाल कर अपने वजन को काम करने का तरीका अपनाया. मैं तो कहूंगी कि अगर आपको भी अपना वजन कम करना है तो चीनी, सोडा, और ग्लुटेन से दूरी बनाए रखनी होगी और हैल्दी फूड से दिन की शुरुआत करनी होगी. मैं पूरे दिन हल्का खाना और नाश्ता करती हूं.

- फिटनेस की आपकी डेली रुटीन क्या है?

फिट रहने के लिए खुद को सजा देने के विचार को मैं सही नहीं मानती. फिट होने का मतलब है खुद के शरीर को लेकर संतुष्ट महसूस करना. मैं सबसे फिट होने की बजाय खुद का ही बेहतर वर्शन बनने में विश्वास रखती हूं. यही वजह है कि मैं सब कुछ खाती हूं पर जिम्मेदारी के साथ. खान-पान का सेहतमंद तरीका अपनाया एक लंबी प्रक्रिया है, इसलिए कभी भी क्रैश डाइट न अपनाएं.

- आपने पिछले साल संयुक्त राष्ट्र में मीडिया में महिलाओं के प्रतिनिधत्व के बारे में एक भाषण दिया था. आपका वह अनुभव कैसा था?

पश्चिमी दुनिया के लिए हम भूरे लोग हैं, जो अब पश्चिम में काम करते हैं. मैं वहां गई और मैंने अपना अनुभव सांझा किया. यह देखना मजेदार था कि वे लोग भारतीय फिल्मों के बारे में क्या सोचते हैं और हमारी फिल्में कैसे दिनों दिन बेहतर होती जा रही है.

लीक से हटकर चलते हैं अभय देओल

अभय देओल की फिल्म नानू की जानू गत दिनों रिलीज हुई जो बाक्स ऑफिस के लिहाज से कुछ खास नहीं रही, लेकिन फराज हैदर द्वारा निर्देशित, कॉमेडी बेस्ड इस लव स्टोरी को खासा पसंद किया गया है. अभय की जबरदस्त अभिनय क्षमता पर किसी को शक नहीं है. परंतु उनकी रुचि हमेशा ही लीक से हटकर फिल्में करने में रही है. उसकी शुरु से फार्मूला वाली कमर्शियल फिल्मों से अलग तरह के अभिनेता की छवि रही है लेकिन अभय का कहना है कि यह दूरी उसकी ओर से नहीं बल्कि मेकर्स की ओर से है, जिन्हें लगता है कि वह कमर्शियल फिल्मों के लायक नहीं हैं.

अभय काफी समय से बड़े पर्दे से दूर रहे, जब उसकी फिल्मों के बीच काफी अंतराल रहा. 2015 की तरह 2017 में भी उसकी कोई फिल्म रिलीज नहीं हुई लेकिन अब वह एक साथ कई फिल्में कर रहे हैं. एक साइंस फिक्शन आधारित साउथ इंडियन फिल्म भी उसके पास है. अभय अमेरिका की इंटरनेशनल फिल्म द फील्ड में भी किरदार निभा रहे हैं. जे एल 50 उसके द्वारा अभिनीत वास्तविक जिंदगी पर आधारित फिल्म है. इसके अलावा आनंद एल. राय ने शाहरुख खान, कैटरीना कैफ तथा अनुष्का स्टॉरर फिल्म जीरो के लिए उसे साइन किया है. इसमें शाहरुख पहली बार एक बौने का किरदार निभा रहे हैं. कहा जा रहा है कि फिल्म में अभय शराब की लत से जूझ रही कैटरीना से रोमांस करने वाले उसके ऐसे ब्वॉयफ्रेंड के किरदार में हैं जो बाद में कैट को छोड़ देता है. जिसके बाद कैट का प्यार पर से भरोसा उठ जाता है. और उसका जीवन कई तरीकों से प्रभावित होता है. इसमें अनुष्का एक साइंटिस्ट का किरदार निभा रही हैं. 42 साल के हो चुके अभय पहले भी कैटरीना के साथ फिल्म जिंदगी न मिलेगी दोबारा में नजर आ चुके हैं.

सब कुछ दांव पर लगा सकती हैं फातिमा

फि ल्म दंगल में फातिमा सना शेख ने आमिर खान की बेटी गीता फोगाट का किरदार निभाया था और इसके साथ ही उ स ा क ी किस्मत चमक उठी थी. अब वह अमिताभ बच्चन और आमिर खान स्टारर यशराज फिल्म्स की फिल्म ठग्स ऑफ हिंदोस्तान में आमिर को प्रेयसी का किरदार निभा रही हैं. वह एक ऐसी योध्दा का किरदार निभा रही हैं, जो बहुत मजबूत है. तलवारबाजी और तीरंदाजी करती है और आमिर को मन ही मन चाहती है. उसकी चाहत इस हद तक बढ़ चुकी है कि आमिर के बिना उसके लिए एक पल भी गुजार पाना नामुमकिन है. फिल्म में अलग तरह का एक्शन है. फातिमा जैसी न्यूकमर के लिए आमिर और अमिताभ जैसे सितारों के साथ करियर की शुरुआत में ही काम कर लेना किसी गर्व से कम नहीं है. आमिर के साथ उसकी यह लगातार दूसरी फिल्म है. फातिमा ने अमिताभ बच्चन के अपोजिट एक और फिल्म जमानत जस्टिस फार आल साइन की है. यह एक ऐसे वकील की रोमांटिक कहानी है, जो एक दुर्घटना में अपनी आंखों की रोशनी खो देता है. ठग्स ऑफ हिंदोस्तान नवंबर में रिलीज होगी. इसे पाने के लिए फातिमा ने कई राउंड ऑडिशन दिए थे. यह इस साल की सबसे बड़ी फिल्मों में से एक है. अमिताभ और आमिर की लुक के प्रति भी लोगों में भारी कौतूहल है. इस फिल्म में फातिमा ने जिस तरह से पूरे समर्पण के साथ काम किया है, उसे देखकर कहा जा सकता है कि वह आमिर खान की पक्की शागिर्द है और वह किसी भी किरदार के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा सकती है. ऐसी अटकलें है कि आमिर ने दबाव डालकर इस फिल्म में फातिमा को एंट्री दिलवाई थी. आदित्य चोपड़ा उस किरदार के लिए वाणी कपूर को लगभग फाइनल कर चुके थे. इस तरह अचानक फातिमा की फिल्म में एंट्री पर हर कोई हैरान था. फातिमा की खूबसूरती और जानदार अभिनय का आमिर कायल हो चुका है. दंगल के ऑडीशन के लिए आमिर के पास फातिमा किसी परिचित का रिफरेंस लेकर आयी थी और केवल दो मिनट में आमिर ने फातिमा को गीता फोगाट के किरदार के लिए चुन लिया. अचानक लिए उसके इस फैसले पर हर काई हैरान था.

मुम्बई है मेरा मायका : माधुरी दीक्षित

बॉलीवुड की धक धक गर्ल कहलाने वाली माधुरी दीक्षित ने 1999 में श्रीराम माधव नेने के साथ शादी करने के बाद अमेरिका के डैनवर को अपना घर बना लिया था. वहां लगभग एक दशक तक रहने के बाद वह परिवार समेत वापस मुंबई आ गई. फिलहाल वह एक मराठी फिल्म करने के अलावा फिल्म निर्माण भी कर रही हैं. इसके अतिरिक्त वह टीवी पर एक डांस शो भी जज करेंगी. पेश हैं उनसे एक बातचीत के अंश-

शादी के बाद लगभग एक दशक तक आप डैनवर में रही. क्या वहां की जिंदगी को मिस करती हैं.

-मुंबई मेरा मायका है जबकि अमेरिका मेरा ससुराल था. डैनवर में रहते हुए मेरा पूरा फोकस अपने परिवार पर था. वहां मेरे बच्चे ही मेरी दुनिया का केंद्र थे और रहेंगे भी. मैंने वहां काफी आनंद उठाया क्योंकि परिवार का पालन पोषण हमेशा से मेरा सपना रहा था और वहां मैं बिल्कुल बिना किसी रोक टोक के अपनी जिंदगी जी सकती थी. अब मैं भारत में हूं और समय के साथ चल रही हूं.

आपने अपनी जिंदगी से प्रेरित एक सिचुएशनल कॉमेडी के लिए प्रियंका चोपड़ा से हाथ मिलाया है. क्या कहेंगी.

-टीवी काफी फनी माध्यम है. कुछ चीजें करने में थोड़ा वक्त लगता है. इस शो की स्क्रिप्ट तैयार की जा रही है बाकी काम भी प्रगति पर है. देखते हैं आगे क्या होता है.

आपका अब तक का सफर कैसा रहा

-अभी यह सफर काफी छोटा लगता है. मुझे काफी प्यार और सम्मान मिला है और हम जिंदगी के हर पल का लुत्फ ले रहे हैं. जब दोनों जीवनसाथी एक दूसरे को समझ जाते हैं, तो जिंदगी आसान हो जाती है.

आपने 1984 में फिल्म अबोध से डेब्यू किया था. अब लगभग 30 वर्ष बाद मराठी फिल्म करने के पीछे क्या वजह रही.

-फिल्म की विषय वस्तु यदि जानदार हो तो भाषा कोई मायने नहीं रखती. जब मुझे बकेट लिस्ट ऑफर की गई थी तो मैं वास्तव में ही मराठी फिल्म करना चाहती थी. यह फिल्म एक शानदार फिल्म होगी. इसकी कहानी एक आम औरत की कहानी है.

एक पत्नी, मां तथा गृहिणी के तौर पर अपने सफर को कैसे देखती हैं.

-मैं इनके अलावा एक बेटी तथा बहू भी हूं. ये सभी भूमिकाएं लोगों को सुख देने के लिए हैं, इसीलिए कई बार आप खुद को भूल जाते हैं. मैं यह बात स्वीकार करती हूं कि जब बात बच्चों की आती है, तो मैं सब कुछ छोड़ देती हूं और जो मुझे चाहिए वह करती हूं. मैंने अपने बारे में यही एक बात जानी है.

क्या रयान तथा आरिन की रुचि फिल्म मेकिंग में है या मेडिसिन में.

-मुझे नहीं पता. बच्चों के पास आज बहुत से विकल्प हैं. मेरे बेटों को संगीत से प्यार है. वे पियानो तथा तबला बजाते हैं. मैं चाहती हूं कि वे अपनी राह खुद चुनें. जो वे कर रहे हो, उसके प्रति उनके मन में चाहत होनी चाहिए तभी वे जिंदगी में आगे बढ़ सकेंगे.

एक स्पेशल कोर्ट ड्रामा है सरकार हाजिर हो

भारत देश का इतिहास दुनिया में सबसे पुराना है. कई युग आए और कई युग बदले, पर इस दुनिया में अगर कोई व्यक्ति नहीं बदला तो वह है नारी. हर युग में नारी का एक अलग ही महत्व रहा है. चाहे रामायण काल हो या महाभारत का समय. नारी हमेशा नर पर भारी ही पड़ी हे. अगर सीता ने रावण का अपमान नहीं किया होता तो राम तथा रावण का युद्ध नहीं हुआ होता और द्रोपदी ने दुर्योधन का अपमान करते हुए ये नहीं कहा होता कि अंधे के बच्चे अंधे ही होते हैं तो महाभारत घटा ही नहीं होता. हर युग में नारी को लेकर विवाद और चर्चे जरूर होते हैं, चाहे महाभारत हो या आज का भारत. झांडे की वजह सिर्फ नारी ही रही हैं. आज भी भारत जैसे प्रगतिशील देश में नारी ही चौतरफा खबरों में छाई हुई है. इसी विषय को लेकर लेखक निर्देशक पंडित व्यास द्वारा सेंसर बोर्ड से अ कैटेगरी में पास हुई फिल्म सरकार हाजिर हो का निर्माण किया है. पंडित व्यास प्रॉडक्शन्स कृत सरकार हाजिर हो भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम के कारण मीडिया की सुर्खियों में रह चुकी है. जबकि सरकार हाजिर हो का सरकार या राजनीति से दूर का भी वास्ता नहीं है. एम.एम. गुप्ता प्रस्तुत सरकार हाजिर हो देश की दो सच्ची व क्रूर घटनाओं पर आधारित है. जिन्होंने पूरे देश को दहला दिया था. दर्शक फिल्म के प्रारंभ में ही समझ चुका होता है कि यहां किन घटनाओं का जिक्र हो रहा है. एक वाकिये में एक बहन अपने भाई (वह दोनों कैसे भाई बहिन हैं, इसे फिल्म देखकर ही समझा जा सकता है) के साथ शादी करना चाहती है. उसका यह भी कहना है कि वो कथित रूप से उसके बच्चे की मां बनने वाली है. दुनिया वालों का वास्ता देकर मां (अनुपमा शर्मा) अपनी बेटी को ऐसा करने से बहुत रोकती है पर बेटी अपनी जिद पर अड़ जाती है. बेटी भी मां के लगातार पति बदलने से दुखी है और बात बेटी की हत्या तक जा पहुंचती है. बेटी (करिश्मा कंवर) ने जिस तरह अपने मरने के सीन में जान डाली है, वह देखने लायक है. बेटी के साथ ही घर के नौकर(एन.के. पंत) का भी कत्ल हुआ है. बाद में पुलिस इंकवायरी में मातापिता दोनों अपनी ही बेटी की हत्या के आरोप में गिरफ्तार भी कर लिए जाते हैं. एक लंबे समय तक जेल में रहने के बाद उन्हें जमानत मिली है. इसी के साथ केस कोर्ट में दाखिला पा जाता है. जब ये केस कोर्ट में शुरूहोता है, वहां एक अलग ही स्टोरी जन्म लेती है. होता यह है कि कोर्ट में इन दोनों का केस लड़ने के लिए जो वकील अनुबंधित किये गए हैं, वो लॉ की पढ़ाई के समय के साथी हैं. पब्लिक प्रोसिक्यूटर(अमित कुमार) के साथ बरसों पहले एक दूसरे से प्यार करने के बावजूद डिफेंस लॉयर(आरती जोशी) शादी नहीं कर पाई. वह वर्तमान में विधवा हैं और सरकारी वकील कुंआरा होते हुए भी आज भी उससे शादी करने के सपने संजोए है. यहां एक जबरदस्त ड्रामा

व एक सामाजिक संदेश से दर्शकों को रूबरू होना पड़ता है. जो इस फिल्म का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष है. ऐसा होने के बावजूद दोनों वकीलों की कोर्ट में गर्मागर्म बहस दर्शकों को झकझोरने के साथ ही मजा भी देती है. कोर्ट में वकीलों व जज के बीच खूब हंसीमजाक होती है जो दर्शकों का भरपूर मनोरंजन करती है. सरकार हाजिर हो के लेखक निर्माता निर्देशक पंडित व्यास का कहना है कि अदालत के रोमांचक ड्रामे हमेशा दर्शक पसंद करते हैं. उनकी गर्मागर्म उन्हें खूब भाती है. मिसाल के तौर पर कानून, ये रास्ते हैं प्यार के, इत्तेफाक, इंसाफ का तराजू, दामिनी, वक्त तथा और भी कई फिल्में. सरकार... 13 जुलाई को समस्त भारत में भव्य पैमाने पर रिलीज होने जा रही है. इस फिल्म में मनोज मल्होत्रा, करिश्मा कंवर, अमित कुमार, आरती जोशी अनुपमा शर्मा, पृथ्वी जुत्सी, शशि रंजन, पूजा दीक्षित और हेमंत शर्मा ने प्रमुख भूमिका निभाई है. छायाकार हीरा सरोज, कार्यकारी निर्माता हरीश व्यास व ध्वनि मिश्रण शानू शेठ का है. वहीं पंडित व्यास के गीतों को संगीत से संवारा है एन.के. नंदन ने.